लाइटनिंग (बड़ी किताब) | कक्षा में कहानी

कमलेश चन्द्र जोशी

स्कूली बच्चों को *लाइटनिंग* जैसी बड़ी क़िताबों से कम ही अवगत कराया जाता है। इस प्रकार की सामग्री स्कूलों में आसानी से उपलब्ध नहीं होती है। जब बच्चे पहली बार लाइटनिंग किताब देखते हैं, तो वे बहुत उत्साहित हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने पहले कभी इतने बड़े आकार की किताब नहीं पढ़ी होती है। इस किताब में एक बड़ी किताब की सभी विशेषताएँ हैं और इसकी सामग्री बच्चों के लिए प्रासंगिक है और उन्हें नए अनुभव प्रदान करती है। जब हम बच्चों को पढ़ना सिखाने के शिक्षाशास्त्र पर विचार करते हैं, तो इस किताब में बच्चों के लिए अनुमान लगाने और चित्रों के स्पष्टीकरण सामने रखने के कई अवसर हैं। चित्र बहुत आकर्षक और मनोरंजक हैं। कुछ स्कूलों में कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के यह किताब पढ़ने के अनुभव इस लेख में साझा किए गए हैं।

यह कहानी लाइटनिंग नाम की एक मशहूर बाघिन की है, जो रणथम्भोर के जंगलों (रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान) में रहती है। किताब के चित्रों को देखकर बच्चों को पता चलता है कि जंगल में एक साँप, एक हिरण, एक पक्षी और एक मन्दिर है। तस्वीरें उन्हें लाइटनिंग की पूरे दिन की नियमित गतिविधियों से भी परिचित कराती हैं। यह किताब इस मायने में अनूठी है कि यह जंगली जानवरों के बारे में हमारी धारणा को चुनौती देती है कि वे ख़तरनाक होते हैं और हम पर हमला करते हैं और उनके प्रति हमारी संवेदनशीलता की भावना को बढ़ावा देती है। उत्तराखण्ड के अख़बारों में इन्सानों या मवेशियों पर बाघ या तेंदुए के हमले की ख़बरें छपना आम हैं। परिणामस्वरूप, बाघ के बारे में लोगों की धारणा एक ख़तरनाक जानवर की है। और बच्चे भी यही सीखते हैं। इससे जानवरों के प्रति हमारी संवेदनशीलता प्रभावित होती है, जो नैतिक उपदेश तक ही सीमित है।

किताब के पहले कुछ पन्नों पर चित्र और विवरण (रणथम्भोर) जंगल और लाइटनिंग के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध को दर्शाते हैं। यह जंगल और गाँव के लोगों दोनों से रिश्ता है। इससे पाठक को यह भी पता चलता है कि किस तरह एक जंगल और उसमें रहने वाले जानवरों और पक्षियों के बीच सहजीवी सम्बन्ध होता है और साथ ही इसमें मनुष्य के साथ जंगल के सम्बन्ध की पड़ताल की गई है। कहानी इस रिश्ते को मज़बूत करती चलती है। कुछ स्थानों पर, किताब हमें अपनी पूर्वकल्पित धारणाओं और जानवरों के साथ हमारे सम्बन्धों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

जब बच्चे पहली बार इस किताब पर चर्चा करते हैं, तो वे कहते हैं कि लाइटनिंग एक शेर, चीता, बाघ इत्यादि है। बातचीत के दौरान बाघ की ख़ास विशेषताओं/ लक्षणों को समझाने की ज़रूरत पड़ी। किताब पढ़ते समय बच्चों को बताया गया कि लाइटनिंग जंगल में घूम रही है, अब पानी पीने जा रही है और अब एक पेड़ के नीचे बैठी है। जब उनसे पूछा गया कि कहानी में आगे क्या होगा, तो बच्चों ने कहा कि वह एक जानवर पर हमला करेगी।

लेकिन कहानी में अप्रत्याशित मोड़ तब आता है जब लाइटनिंग एक कुएँ में गिर जाती है और बच्चे सोचने लगते हैं कि क्या हुआ होगा। वे इस बात से हैरान हैं कि जब सब कुछ इतना अच्छा चल रहा था, तो अचानक यह घटना क्यों घटी? उन्होंने उजले चित्र देखे थे और उनसे प्रसन्न हुए थे। लेकिन अचानक अगली छवि काली थी! बच्चों को निराशा महसूस हुई। जब उन्होंने उस कुएँ के अन्दर की तस्वीर देखी जिसमें लाइटनिंग गिरी थी तो वे चौंक गए। वे उसके बारे में चिन्तित हो गए और सोचने लगे कि वह कैसे जीवित रहेगी। हालाँकि इससे उन्हें परेशानी हुई, फिर भी उन्होंने आशा व्यक्त की कि अन्ततः उसे बचा लिया जाएगा। उनके विश्वास की पुष्टि तब होती है जब कहानी में, ग्रामीण एकत्र होते हैं और उनमें से एक फ़ोन करता है। कहानी ने उन्हें इस तरह तल्लीन रखा।

किताब के शीर्षक को लेकर भी बहस हुई। बच्चों ने लाइटनिंग की आँखों के बारे में अनुमान लगाया कि वे रात में बिल्ली की आँखों की तरह चमकती होंगी और इस तरह उसका नाम लाइटनिंग पड़ा; या कि उसका नाम उसकी दहाड़ के कारण रखा गया होगा, जो बारिश के दौरान बिजली की चमक और गड़गड़ाहट के समान है।

बच्चों को यह कहानी सुनाते समय, जब हम इस बिन्दु पर पहुँचते हैं कि लाइटनिंग कुएँ में है, तो मैं बच्चों से पूछता हूँ, "आपको क्या लगता है कि लाइटनिंग कैसे निकलेगी?" बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर विचार प्रस्तुत करते हैं। कुछ बच्चे सुझाव देते हैं कि कुएँ में सीढ़ी डालकर उसे बाहर निकाला जा सकता है; कोई कहता है कि उसे खुदाई मशीन की मदद से बाहर लाया जा सकता है; एक अन्य बच्चा सोचता

है कि वह अपने पंजों का उपयोग करके बाहर आ जाएगी; या उसे रस्सी का उपयोग करके बाहर खींचा जा सकता है। कोई और सुझाव देता है कि एक बचाव दल तैनात किया जाना चाहिए और कुछ यह भी सुझाते हैं कि पुलिस को बुलाना चाहिए। बाद में, जब वे तस्वीर में एक ग्रामीण को फ़ोन करते हुए देखते हैं, तो उन्हें एहसास होता है कि वह पुलिस को बुला रहा है। कुछ लोग वन रक्षकों और अधिकारियों का भी उल्लेख करते हैं।

कहानी में बाद में, जब वे बाघिन को ट्रैंक्विलाइज़र गन से बेहोश करके बचाए जाते हुए देखते हैं, तो उनके दिमाग़ इस सम्भावना के प्रति खुल जाते हैं और उन्हें एक नया दृष्टिकोण प्राप्त होता है कि जानवरों को बचाने के प्रयास कैसे किए जाते हैं। उसे बेहोश करने के लिए बन्दूक से इंजेक्शन कैसे लगाया जाता है? यह कहाँ दिया जाता है? फिर उसे बाहर कैसे निकाला जाता है? बच्चों की आँखें आश्चर्य से फटी रह गईं। जैसे-जैसे हम कहानी को आगे बढ़ाते हैं, कोई भी उनकी प्रत्याशा को महसूस कर सकता है।

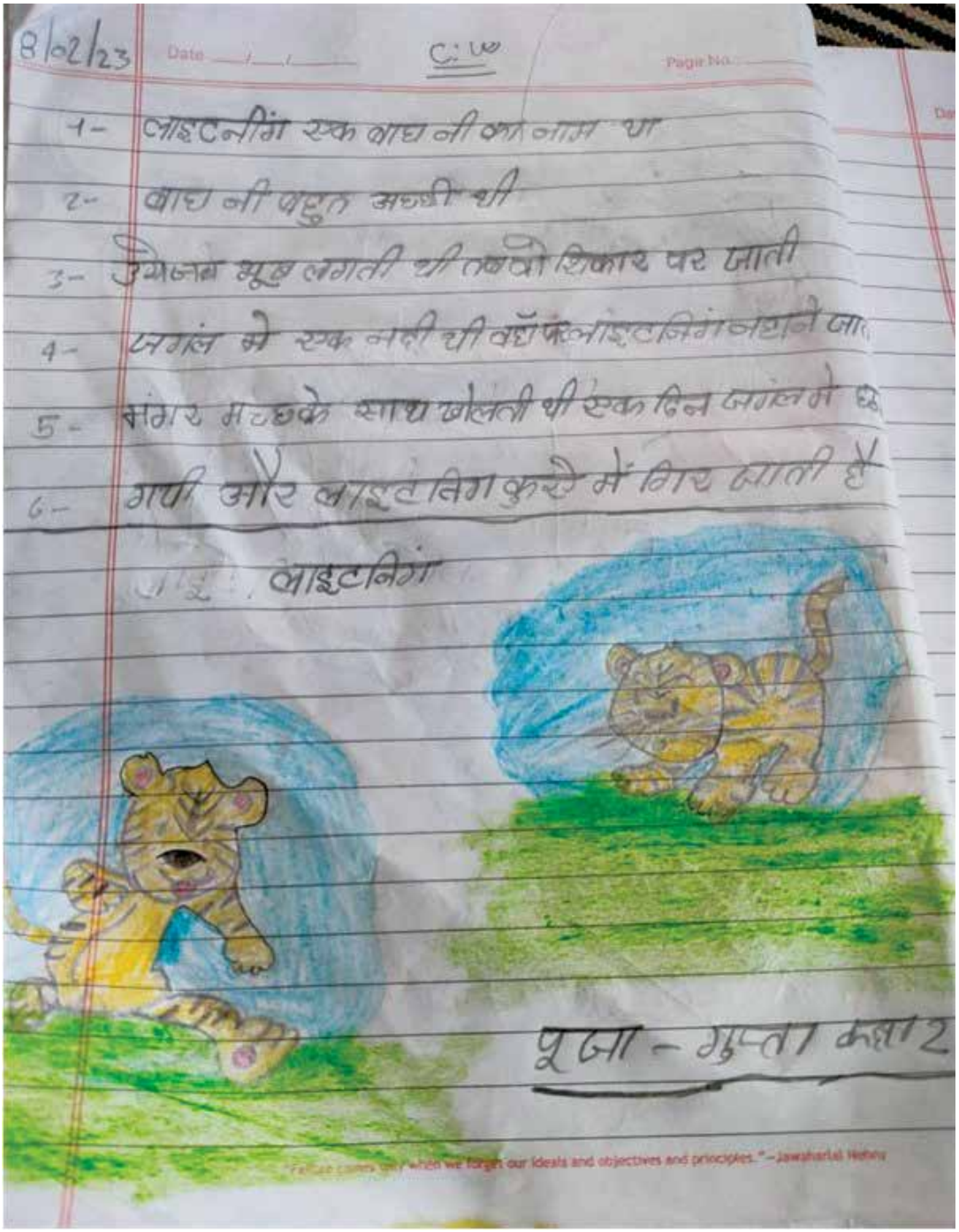

चित्र-1 : *शासकीय प्राथमिक विद्यालय, पकड़िया, खटीमा, उत्तराखण्ड के कक्षा-2 के विद्यार्थी द्वारा बनाया गया कहानी पर आधारित चित्र।*

कुएँ से निकाले जाने के बाद जब लाइटनिंग को इलाज के लिए वैन में ले जाया जाता है तो बच्चों को राहत महसूस होती है। कहानी सुनने के बाद, जिस स्कूल में मैंने इसे पढ़ा, वहाँ के बच्चों ने कहा कि कहानी मज़ेदार थी। उन्होंने पूछा, "क्या आप कल आओगे?" इस किताब की ख़ास बात यह है कि इसमें बच्चों को यह अनुमान लगाते रहना होता है कि आगे क्या होगा। इस तरह बच्चों की क़िताबों में रुचि बढ़ती है।

अवलोकन

जब हम बच्चों के साथ पढ़ने या उनके साथ चर्चा करने के लिए किसी किताब का चयन करते हैं, तो हमें ख़ुद से पूछना चाहिए, "इस किताब में ऐसा क्या ख़ास है जो बच्चों से जुड़ेगा और उन्हें एक अलग दृष्टिकोण या कुछ नए विचार और सोचने के अवसर भी देगा?" यह इस धारणा के समान है कि साहित्य पढ़ने से हम 'नए' बन जाते हैं; कि हम वे लोग नहीं रह जाते जो हम थे। यह एक अच्छी किताब का आनन्द है। यह भी सम्भव है कि कोई किताब उनकी दीर्घकालिक स्मृतियों में विशेष स्थान बना ले; जिसे भुलाया नहीं जा सकता। किसी किताब को बच्चों के साथ 'जोड़ना' इस बात पर निर्भर करता है कि किताब को सुनाने वाला व्यक्ति बच्चों को किताब किस तरह पेश करता है।

कहानी सुनने के बाद, बच्चे ख़ुद को अभिव्यक्त करने के लिए किताब पर आधारित अपने चित्र बनाते हैं। वे किताब के लिए नए शीर्षक भी सुझाते हैं। इससे उनके विचार प्रेरित होते हैं। इसके साथ ही हम इस बारे में भी बात करते हैं कि वे अपने आस-पास के जानवरों और पक्षियों की कैसे मदद करते हैं। उन्होंने पिल्लों की मदद करने के अपने अनुभवों के बारे में बात की। परिणामस्वरूप, हमारा मानना है कि बच्चों में क़िताबों के प्रति प्रेम विकसित करने के ऐसे अवसर नियमित रूप से प्रदान किए जाने चाहिए। बेशक, जब बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए किताबें चुनने की बात आती है तो शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। अच्छी किताबें चुनने के लिए शिक्षक को बच्चों के लिए अच्छे साहित्य की समझ हासिल करनी चाहिए। एक और महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि बच्चों को पढ़कर सुनाना अभ्यास के साथ बेहतर होता है : शिक्षक जितना अधिक पढ़ेंगे, वे उतने ही बेहतर बनेंगे।

नोट

बड़ी किताबें उन छोटे बच्चों के लिए होती हैं जो पढ़ना सीख रहे हैं। ये किताबें बच्चों को मुद्रित सामग्री से जोड़ने में मदद करती हैं ताकि वे स्वयं किताबें देखने, उलटने-पलटने और पढ़ने के लिए प्रेरित हों।

References

Lightning (*Big Book*) Author: Prabhat, Illustrator: Allen Shaw. Jugnoo Prakashan, an imprint of Ektara Trust. https://www.ektaraindia.in/ektarashop/Lightning?search=Big%20Book&description=true

कमलेश चन्द्र जोशी लम्बे समय से प्राथमिक शिक्षा से जुड़े रहे हैं। वे प्रारम्भिक साक्षरता, बच्चों के साहित्य और शिक्षक शिक्षा सहित विभिन्न शैक्षिक मुद्दों के बारे में जुनूनी हैं। वे वर्तमान में उत्तराखण्ड के उधमसिंह नगर में अज़ीम प्रेमजी ज़िला संस्थान में कार्यरत हैं। उनसे *kamlesh@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : निशान्त राणा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय